Toppersnotes
Unleash the topper in you

BPSC

बिहार लोक सेवा आयोग

पेपर – I || भाग – III

आधुनिक इतिहास

(भारत एवं बिहार)

SIERRA INNOVATIONS

विषय-सूची

1. यूरोपियों का आगमन 1

2. ब्रिटिश साम्राज्यवादी प्रसार

- बंगाल 5
- मैसूर 8
- पंजाब 14
- अवध 15

3. ब्रिटिश साम्राज्यवादी नीतियां 16

4. ब्रिटिश आर्थिक नीतियां 19

5. ब्रिटिश भू-राजस्व नीति 21

6. ब्रिटिश प्रशासनिक नीतियां 38

7. ब्रिटिश सामाजिक सांस्कृतिक नीतियां 44

8. ब्रिटिश शिक्षा नीति 48

9. भारतीय प्रतिक्रिया 51

- जनजातिय विद्रोह 51
- किसान विद्रोह 54
- 1857 का विद्रोह 59

10. सामाजिक - धार्मिक सुधार आंदोलन 64

- राजा राममोहन राय 66
- आर्य समाज एवं दयानंद सरस्वती 68
- स्वामी विवेकानंद एवं रामकृष्ण मिशन 69

11. मुस्लिम सुधार आंदोलन 72

12. राष्ट्रीय आंदोलन 75

- उदारवादी आंदोलन 79
- उग्रवादी आंदोलन 81
- बंगाल का विभाजन 83
- स्वदेशी आंदोलन 85
- क्रांतिकारी आंदोलन 88
- गांधी आंदोलन 92
- खिलाफत आंदोलन 96
- असहयोग आंदोलन 98
- सविनय अवज्ञा आंदोलन 104
- भारत छोडो आंदोलन 111

13. 1945 के बाद भारत 114

14. बिहार का आधुनिक इतिहास 136

यूरोपियों का आगमन

आगमन

पुर्तगाली | डच | अंग्रेज | डेनिश | फ्रांसीसी

पुर्तगाली :-

1. भारत में सर्वप्रथम आने वाले यूरोपियों में पुर्तगाली थे । उन्होंने मसाला व्यापार को ध्यान में रखते हुए भारत में प्रवेश किया और विभिन्न स्थानों पर उत्पादन फैक्ट्री/कारखाने/बस्ती/किले की स्थापना की । यह कारखाने उत्पादन के केन्द्र नहीं थे बल्कि भण्डारग्रह थे । यहाँ पर वस्तुओं का संग्रह कर उन्हे यूरोप भेजा जाता था । यह फैक्ट्री किलाबन्द क्षेत्र जैसी होती थी, जिसमें गोदाम, कार्यालय तथा व्यापारियों के लिये आवास भी होते थे । पुर्तगालियों ने कारखाना निर्माण की इस पद्धति को इटली के व्यापारियों से प्राप्त किया ।

2. पुर्तगाली यात्री वास्कोडिगामा 1498 में सर्वप्रथम भारत के पश्चिमी तट कालीकट से आया जहाँ हिन्दू शासक जमोरिन ने उसका स्वागत किया जबकि वहाँ मौजूद अरबी व्यापारियों ने विरोध किया और विरोध का कारण आर्थिक था ।

3. भारत में प्रथम पुर्तगाली गवर्नर फ्रांसिस डी. अल्मीडा थे जिसने ब्लू वाटर पॉलिसी (नीला पानी नीति) अर्थात् शांतिपूर्वक व्यापार की नीति बनाई ।

4. पुर्तगाली गवर्नर अल्बुकर्क ने भारत में पुर्तगाली पुरूषों को भारतीय स्त्रियों के साथ विवाह के लिये प्रोत्साहित किया जिससे कि भारत में पुर्तगाली बस्ती की स्थापना को मजबूत आधार मिल सके। अल्बुकर्क को भारत में वास्तविक शक्ति का संस्थापक भी कहा जाता है ।

5. 1661 में ब्रिटिश राजकुमार चार्ल्स द्वितीय के साथ पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन का विवाह हुआ और उपहार स्वरूप ब्रिटिश राजकुमार को बॉम्बे प्राप्त हुआ जिसने आगे चलकर 1668 में बॉम्बे ब्रिटिश कंपनी को दे दिया ।

प्रश्न :- ब्रिटिश कम्पनी को बॉम्बे प्राप्त हुआ

अ. पुर्तगालियों से ✓ब. ब्रिटिश से

स. डच से द. मराठों से

पुर्तगालियों का योगदान :-

1. भारत में प्रिटिंग प्रेस की स्थापना की ।
2. तम्बाकू की खेती का प्रचलन शुरू किया ।
3. यूरोपीय गौथिक स्थापत्य (मीनारों का नुकीलापन) का भारत में प्रवेश हुआ ।

पतन का कारण :-

1. पुर्तगालियों की ईसाईकरण की नीति ने असंतोष पैदा किया । फलतः उन्हें स्थानीय सहयोग प्राप्त नहीं हुआ ।
2. व्यापार के साथ उन्होंने लूटपाट की नीति जारी रखी। अतः विरोधी पैदा हुए । वस्तुतः पुर्तगालियों ने कार्टेज-आर्मेडा-काफिला पद्धति की शुरूआत की जिसके तहत समुद्री व्यापार के लिए जहाजों को पुर्तगालियों से परमिट प्राप्त करना होता था । इसे न लेने वाले को दण्डित करते हुए उसके समुद्री जहाज को लूट लिया जाता था ।

डच (नीदरलैण्ड/हालैण्ड)[1602]:-

1. 1602 में डच ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना की गई । इसके देखरेख के लिए 17 सदस्यीय बोर्ड का गठन किया गया । डच सरकार का कंपनी पर नियंत्रण था और कम्पनी के द्वारा की जाने वाली संधियाँ डच सरकार के नाम से की जाती थी । डच कंपनी को युद्ध करने, संधि करने एवं क्षेत्र विस्तार करने की शक्ति सरकार द्वारा प्रदान की गई ।
2. डचों ने बाटविया (इण्डोनेशिया) में अपना मुख्यालय बनाया । भारत स्थित डच कंपनी इसी केन्द्र के प्रति उत्तरदायी थी ।
3. डचों ने मसालों के स्थान पर भारतीय वस्त्र के निर्यात को ज्यादा महत्व दिया। इसी तरह भारत से भारतीय वस्तुओं में वस्त्र के निर्यात को सर्वप्रमुख वस्तु बनाने का श्रेय डचों को दिया जाता है । डचों ने कोरोमण्डल तट से व्यापार को प्रमुखता दी ।
4. अन्ततः 1759 में बेदरा के युद्ध में अंग्रेजों ने डचों को पराजित किया ।

डेनिश कंपनी (डेनमार्क)[1616] :-

डेनिश कंपनी डेनमार्क की कंपनी थी जिसकी स्थापना 1616 ई. में हुई। इसने ट्रैंकोबार (तमिलनाडु) में अपना पहला व्यापारिक केन्द्र बनाया और आगे चलकर अपने सभी केन्द्रों को ब्रिटिश को बेचकर चले गए ।

ब्रिटिश कंपनी :-

1. 1588 में अंग्रेजों ने अपनी नौसैनिक श्रेष्ठता प्रमाणित कर पूर्वी क्षेत्र में व्यापार हेतु कदम बढाया । इसी क्रम में 1599 में ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई जिसे आरंभ में 15 वर्षों के लिए पूर्व के साथ व्यापार करने की अनुमति दी गई। आगे चलकर 1609 में सम्राट जेम्स प्रथम ने एक व्यापारिक एकाधिकार को अनिश्चित काल के लिए बढा दिया ।
2. 1608 में जहाँगीर के शासन काल में कैप्टन हॉकिन्स के नेतृत्व में अंग्रेजों के दल ने सूरत में प्रथम व्यापारिक केन्द्र की स्थापना की और इसके लिए शासक की अनुमति लेनी चाही जो उस समय नहीं मिली । अतः 1613 में सर थॉमस रो के नेतृत्व में आए ब्रिटिश प्रतिनिधि मण्डल को मुगल शासक जहाँगीर द्वारा स्थायी बस्ती निर्माण की अनुमति दी गई । इस तरह सूरत में अंग्रेजों की प्रथम स्थायी बस्ती की स्थापना हुई । (जबकि 1611 में ही दक्षिण भारत में मसूलीपट्टनम में अंग्रेजों ने अपनी प्रथम बस्ती की स्थापना की थी ।)
3. 1698 में बंगाली सूबेदार अजीम उहशान ने अंग्रेजों को सुतानती, गोविन्दपुर, कलकत्ता की जमींदारी प्रदान की इन्ही स्थानों को मिलाकर जॉब चरनॉक ने फोर्ट विलियम कलकत्ता की स्थापना की जिसका प्रथम प्रेसीडेंट चार्ल्स आयर था ।
4. 1717 ई. में मुगल बादशाह फर्रूखशियर ने अंग्रेजों को शाही फरमान प्रदान किया जिसके तहत उन्हें बंगाल में निःशुल्क व्यापार करने की अनुमति प्रदान की गई ।

फ्रांसीसी कंपनी :-

1- 1664 में लुई 14 के समय वित्तमंत्री को कोल्बर्ट के प्रयासों से फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना हुई। फ्रांसीसी कंपनी को राज्य द्वारा विशेषाधिकार और वित्तीय संसाधन प्राप्त थे। यह पूर्णतः सरकारी कंपनी थी।

2. 1668 में फ्रांसीसी कैरो के नेतृत्व में प्रथम फ्रांसीसी दल भारत आया और सूरत में व्यापारिक केंद्र की स्थापना की। भारत मे प्रथम फ्रांसीसी गवर्नर डूप्ले था।

3. अंग्रेज एवं फ्रांसीसियों के मध्य तीन युद्ध हुए जिन्हे कर्नाटक युद्ध के नाम से जाना जाता है। इस युद्ध के दौरान 1760 में अंग्रेजों ने बाडीवाश के युद्ध में फ्रांसीसियों को पराजित किया।

4. राजनीतिक हस्तक्षेप कर आर्थिक लाभ लेने की अवधारणा का सूत्रपात भारत में फ्रांसीसी अधिकारी डूप्ले ने किया जिसे आगे चलकर अंग्रेजों ने अपनाया।

फ्रांसीसियों की पराजय का कारण :-

1. फ्रांसीसी कंपनी पूर्णतः एक सरकारी कंपनी थी। इस कारण निर्णय लेने मे विलंब होता था।
2. फ्रांसीसी अधिकारियों मे सहयोग एवं समन्वय का अभाव था।
3. फ्रांसीसियों की नौ सैनिक क्षमता ब्रिटिश की तुलना में कमजोर थी।
4. ब्रिटिश कंपनी को उनकी अपनी सरकार का जितना समर्थन मिला वैसा फ्रांसीसी कंपनी को प्राप्त नहीं हुआ। यही कारण है कि ब्रिटिश के साथ संघर्ष में फ्रांसीसी पराजित हुए।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

ब्रिटिश साम्राज्यवादी प्रसार

मुगल साम्राज्य- बंगाल

(औरंगजेब) सूबेदार दीवान (मुर्शिद कुली खाँ)

राज परिवार की व्यक्ति

अजीमशा (1698) (प्रायः दिल्ली में रहता था)

वंशानुगत शासन- मुर्शिद कुली खाँ

↓

नबाब

↓

अलीवर्दी खाँ

↓

सिराजुद्दौला

बंगाल

मुर्शिद कुली खाँ :-

1. यह औरंगजेब द्वारा 1700 ई. में बंगाल का दीवान बनाया गया। इस समय बंगाल का सूबेदार अजीमुशान था जो राजदरबार से संबंधित होने के कारण प्रायः दिल्ली दरबार में रहता था। अतः बंगाल में वास्तविक शक्ति मुर्शीद कुली खाँ के पास थी।
2. मुगल सम्राट फर्रूखसियर ने 1717 में मुर्शिद कुली खाँ को बंगाल का सूबेदार नियुक्त किया था। यह मुगल बादशाह द्वारा नियुक्त बंगाल का अंतिम सूबेदार था। इसी के साथ बंगाल में वंशानुगत शासन की शुरूआत हुई।

मुर्शिद कुली खाँ के राजस्व सुधारः-

1. इसने छोटे जमीदारों के विरूद्ध कार्यवाही की।
2. जागीर भूमि का एक बडा हिस्सा खालिसा भूमि (राजकीय भूमि) में परिवर्तित कर दिया।
3. इसने बडे जमीदारों को सहयोग दिया जो राजस्व वसूली एवं भुगतान की जिम्मेदारी लेते थे। अतः उनकी जागीर को बनाए रखा।
4. किसानों को ऋण की सुविधा (तकावी) उपलब्ध कराया।
   मुर्शिद कुली खाँ के सुधारों से नाराज होकर गुलाम मोहम्मद, उदयनारायण आदि जमीदारों ने विद्रोह किया। इन विद्रोहों का दमन कर मुर्शिद कुली खाँ ने अपनी राजधानी ढाका से मुर्शिदाबाद बनाई।

अलीवर्दी खाँ :-

इसने यूरोपियों की तुलना मधुमक्खी से की और कहा कि यदि इन्हें छेडा न जाए तो ये शहद देगी और छेडने पर काट-काट कर मार डालेगी।

सिराजुद्दौला :-

1. नवाब बनने के साथ ही सिराजुद्दौला को अपने संबंधियों से संघर्ष करना पडा। अंग्रेजो ने इस संघर्ष से लाभ उठाने के लिए नवाब के विरोधियों को शरण दी और नवाब की अनुमति के बिना ही किलेबंदी शुरू कर दी। अतः सिराजुद्दौला ने अंग्रेजों के विरूद्ध कार्यवाही करते हुए। कलकत्ता पर हमला किया और जून 1756 ई. में फोर्ट विलियम पर अधिकार कर लिया। इस संदर्भ मे ब्रिटिश अधिकारी हॉलवेल ने ब्लैक होल काण्ड का उल्लेख किया। (146 अंग्रेज बंदियों को नवाब ने एक छोटे कमरे में कैद किया उसमें से अगले दिन केवल 23 जिंदा बचे।)
2. अंग्रेजों ने कलकता पर पुनः नियत्रंण के लिए क्लाइव के नेतृत्व में एक सेना भेजी और कलकत्ता पर पुनः आधिकार कर लिया। अब क्लाइव ने नवाब के अधिकारियों को अपने पक्ष में करना शुरू किया जिसमें प्रमुख (मीर बख्शी, सैन्य प्रमुख), मणिकचंद (कलकता का प्रभारी), अमीनचंद (पूंजीपति), जगतसेठ (बैंकर) थे।

प्लासी का युद्ध (23 जून 1757) :-

1. प्लासी बंगाल के नादिया जिले के भागीरथी तट पर अवस्थित है। इस युद्ध में अंगेजी सेना का नेतृत्व क्लाइव ने किया। षड्यंत्र के कारण नबाव की सेना पराजित हुई और सिराजुद्दौला को युद्ध मैदान से भागना पडा। नबाव की ओर से मीर मदन एवं मोहन लाल जैसे सैन्य अधिकारियों ने वफादारी दिखाई और अब बंगाल का नवाब मीर जाफर को बनाया गया।

मीर जाफर (1757-1760) :-

इसने नवाबी प्राप्त करने के पश्चात कंपनी को 24 परगना क्षेत्र की जमीदारी दी किंतु मीर जाफर अंग्रेजों की मांग से तंग आकर डचों से मिलकर अंग्रेजों के विरूद्ध कार्यवाही की योजना बनाई परंतु इसका भेद खुल गया । अतः 1759 मे बेदारा के युद्ध में अंग्रेजों ने डचों को पराजित किया और मीर कासिम को नवाब बनाया ।

मीर कासिम (1760-63) :-

मीर जाफर के पश्चात अंग्रेजों ने मीर कासिम को बंगाल का नवाब बनाया । इससे अंग्रेजों को बर्दवान, मिर्जापुर, चटगांव क्षेत्र की जमीदारीं प्राप्त हुई। साथ ही कुछ उपहार के रूप में धन सम्पदा की प्राप्ति हुई । इस आधार पर वैंसिटार्ट ने इस सत्ता परिवर्तन को क्रांति की संज्ञा दी ।

किंतु यह वास्तव में क्रांति नहीं थी क्योंकि इस सत्ता परिवर्तन में बंगाल की जनता की कोई भूमिका नहीं थी और न ही इस सत्ता परिवर्तन के पश्चात व्यवस्था में कोई व्यापक परिवर्तन आया । वस्तुतः सत्ता पहले भी अंग्रेजों के द्वारा बनाऐ गए कठपुतली नवाब के पास थी और अब भी एक दूसरी कठपुतली नवाब के पास रही । यह दृष्टि से भी क्रांति नहीं कही जा सकती क्योंकि मीर कासिम से ही ब्रिटिश के आर्थिक हितो को चोट पहुँची और अन्ततः उसे ब्रिटिश के साथ युद्ध करना पडा ।

निष्कर्ष:-

निष्कर्षः हम कह सकते है कि 1760 ई. में बंगाल मे हुआ सत्ता परिवर्तन न तो बंगाल की जनता के लिए और न ही ब्रिटिश के लिए क्रांति का सूचक था ।

प्रश्न :- "1760 मे बंगाल में एक क्रांति हुई ।" समीक्षा कीजिए । (200 शब्द)

उत्तर :-

1. कथन का संदर्भः- मीर जाफर को गद्दी से हटाकर मीर कासिम को बंगाल का नवाब अंग्रेजों द्वारा बनाया गया । मीर कासिम से अंग्रेजों को बर्दमान, मिदनापुर, चटगांव की जागीर एवं उपहार स्वरूप धनराशि मिली । इस आधार पर इस सत्ता परिवर्तन को क्रांति कहा गया ।
2. समीक्षा :-
    1. बंगाल की जनता की कोई भूमिका नहीं रही ।
    2. शासन संरचना में कोई व्यापक परिवर्तन नहीं हुआ ।
    3. मीर कासिम से अंग्रेजों का टकराव हुआ ।
3. निष्कर्ष:-

मीर कासिम ने अपनी राजधानी मुंगेर बनाई और अपनी सेना को यूरोपीय पद्धति से प्रशिक्षित करना शुरू किया । वस्तुतः मीर कासिम नवाब की वास्तविक शक्ति का उपयोग करना चाह रहा था । इसी क्रम मे मीर कासिम ने अंग्रेजों द्वारा किए जा रहे दस्तक के दुरूपयोग को रोकने के लिए अपने राज्य से चुंगी की समाप्ति कर दी । इससे अंग्रेजों के आर्थिक हितों को चोट पहुँची अतः अंग्रेजों के साथ उसका संघर्ष हुआ । अन्ततः मीर कासिम को भागकर अवध के नवाब के यहाँ शरण लेनी पडी। अब नवाब पुनः मीर जाफर को बनाया गया ।

मीर जाफर (1763-65) :-

मीर जाफर के समय बक्सर का युद्ध हुआ । इस युद्ध में अंग्रेजों का नेतृत्व हैक्टर मुनारे ने किया, तो दूसरी तरफ अवध का नवाब शुजाउद्दौला मुगल बादशाह आलम 2 एवं बंगाल का अपदस्थ नवाब मीर कासिम था । युद्ध में अंग्रेजों की विजय हुई और तत्-पश्चात उन्होने पराजित शक्तियों से इलाहाबाद की संधि कर ली ।

नजमुद्दौला (1765-66) :-

मीर जाफर की मृत्यु के पश्चात् नजमुद्दौला को नवाब बनाया गया । इसी के समय इलाहाबाद की संधि हुई और इस संधि के लिए लंदन से क्लाइव को बुलाया गया ।

इलाहाबाद की संधि (1765) :-

अंग्रेजों + मुगल बादशाह + अवध का नवाब + बंगाल का नवाब

अंग्रेजों	मुगल बादशाह	अवध का नवाब	बंगाल का नवाब
↓	↓	↓	↓
क्लाइव	शाह आलम 2	शुजाउद्दौला	नजमुद्दौला

1. इस संधि के तहत अंग्रेजों ने मुगल सम्राट से बंगाल, बिहार, उडीसा की दीवानी प्राप्त की तथा वित्तीय/राजस्व अधिकार प्राप्त किए ।
2. मुगल सम्राट को ब्रिटिश कंपनी रू. 26 लाख पैंशन देगी किन्तु यह धनराशि बंगाल के नवाब पर आरोपित की गई ।
3. अवध के नवाब से संधि कर उससे इलाहाबाद एवं कडा का क्षेत्र लेकर मुगल सम्राट को दे दिया गया और अवध नवाब पर युद्ध हर्जाने के रूप मे रू. 50 लाख आरोपित किये गए ।
4. अवध को अंग्रेजो ने आश्वासन दिया कि अगर कोई शक्ति अवध पर आक्रमण करती है, तो अंग्रेज अवध की सहायता करेंगे जिसका खर्च अवध का नवाब उठाएगा ।

इस संधि से अंग्रेज वैध शासक बन गए । अब बंगाल का राजस्व प्राप्त करने के लिए भारत के मुगल सम्राट द्वारा अधिकृत हो गए। इस तरह बक्सर के युद्ध परिणाम ने अंग्रेजों को वैधता प्रदान की, जहाँ से उन्होंने भारत विजय की प्रक्रिया आरंभ की और धन की लूट को एक संस्थागत रूप दिया इसलिए बक्सर के युद्ध को एक निर्णायक युद्ध भी कहा जाता है ।

द्वैध शासन (1765-72) :-

बंगाल

नवाब	अंग्रेज
↓	↓
प्रशासनिक अधिकार	वित्तीय/दीवानी अधिकार

बंगाल में क्लाइव ने नवाब नजमुद्दौला के समय 1765 में द्वैध शासन लागू किया । इस व्यवस्था के तहत् दीवानी अधिकार तो कंपनी के पास रहा किंतु प्रशासनिक उत्तरदायित्व नवाब के पास रहा जो अंग्रेजों पर ही निर्भर था । इस प्रकार एक ही प्रांत पर दो शक्तियों का शासन मौजूद था । अंग्रेजों के पास वास्तविक शक्ति थी जबकि नवाब के पास उत्तरदायित्व था ।

द्वैध शासन क्यों लागू किया गया/उत्तरदायी कारकः-

1. अंग्रेजों द्वारा बंगाल की जनता पर प्रत्यक्ष नियंत्रण करने से उन्हें भारतीय असंतोष का सामना करना पड सकता था, जिससे उनके आर्थिक लाभ बाधित होते। अतः आर्थिक लाभ लेने के लिए द्वैध शासन को अपनाया गया ।
2. प्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश का भी भय था । वस्तुतः उन्हें कर देने से बचने के लिए द्वैध शासन लागू किया गया ।
3. प्रशासनिक कठिनाइयों से बचने के लिए क्लाइव ने यह नीति लागू की ।
4. क्लाइव यदि बंगाल की सत्ता अपने हाथ में ले लेता। तो ब्रिटिश संसद कंपनी के कार्यो में हस्तक्षेप करते हुए उस पर कठोर नियंत्रण लगा सकती थी ।

परिणाम :-

1. कंपनी के अधिकारियों में दायित्वहीनता का विकास हुआ । फलतः कानून व्यवस्था कमजोर हुई, जिससे अव्यवस्था फैली ।
2. मनमाने तरीके से राजस्व वसूली से कृषकों की स्थिति दयनीय हुई और कृषि का ह्रास हुआ ।
3. किसानों के शोषण में वृद्धि हुई । फलतः उत्पादन में कमी आई । इससे अकाल की स्थिति उत्पन्न हुई।
4. कंपनी के कर्मचारी निजी व्यापार पर अधिक बल देने लगे । अतः कंपनी के व्यापार पर प्रतिकूल प्रभाव पडा । अन्ततः 1772 में वॉरेन हेस्टिंग्स ने द्वैध शासन की समप्ति कर बंगाल पर ब्रिटिश सत्ता स्थापित की ।

मैसूर

विजयनगर साम्राज्य
↓
औडयार वंश
↓
चिक्का कृष्णराज

देवराज (सेनापति)

नंदराज (वित्तमंत्री)
↓
हैदर अली (सैनिक)
↓
1761 में शासक

(1780-1781) ब्रिटिश के लिए संकट का वर्ष
(1) मैसूर-मराठा-निजाम के त्रिगुट
(2) बंगाल एवं बाम्बे के ब्रिटिश अधिकारियों में मतभेद

प्रथम आंग्ल मैसूर युद्ध (1767–69) :-

1761 में हैदर अली मैसूर का शासक बना और उसने फ्रांसीसियों से अपना संबंध बनाया तथा ब्रिटिश विरोधी नीति अपनायी । फलतः अंग्रेजों के साथ उसका संघर्ष हुआ, जो मद्रास की संधि से समाप्त हुआ ।

द्वितीय आंग्ल मैसूर युद्ध (1780–84) :-

1. 1771 ई. में जब मराठों ने मैसूर पर हमला किया, तो अंग्रेजों ने मैसूर की सहायता नहीं की । अतः पहले की गई मद्रास की संधि का उल्लंघन हुआ । फलतः आंग्ल मैसूर संबंध तनावपूर्ण हुए ।
2. अमेरिकी क्रांति के दौरान अमेरिका के साथ फ्रांस भी था और दोनों मिलकर ब्रिटिश के विरूद्ध सैन्य अभियान कर रहे थे । इस तरह ब्रिटिश फ्रांसीसी संबंध संघर्षपूर्ण थे । ऐसे भारत में भी स्थित दोनों कंपनियों के बीच तनाव बढा । इसी क्रम में ब्रिटिश ने फ्रांसीसी बस्ती माहे पर नियंत्रण करना चाहा, जो हैदर के क्षेत्र में स्थित थी । अतः आंग्ल मैसूर युद्ध शुरू हुआ ।
3. इस युद्ध में मैसूर, निजाम और मराठों का त्रिगुट अंग्रेजों के विरूद्ध बना । इस तरह 1780–81 का वर्ष ब्रिटिश के लिए सर्वाधिक संकट का वर्ष अर्थात राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय स्थिति ब्रिटिश के प्रतिकूल थी । वस्तुतः इस समय भारत में मराठों के साथ भी अंग्रेजों का युद्ध चल रहा था तो साथ ही बाम्बे एवं बंगाल के ब्रिटिश अधिकारियों के बीच मतभेद व्याप्त थे, तो दूसरी तरफ अमेरिकी स्वंतत्रता संग्राम के परिणामस्परूप अमेरिका, ब्रिटिश के हाथों से आजाद हो रहा था और इसी क्रम में फ्रांस, हालैण्ड और स्पेन के साथ भी ब्रिटेन का संघर्ष चल रहा था । इस तरह भारतीय और अंतराष्ट्रीय दोनों ही परिस्थितियाँ अंग्रेजों के प्रतिकूल थी किन्तु भारत में मौजूद वारेन हेस्टिंग्स ने कुशलता से इस संकट का समाधान निकाला तथा निजाम और मराठों को अपने पक्ष में किया । वस्तुतः मराठों के साथ सालबाई की संधि कर उसे युद्ध से अलग किया। अन्ततः हैदर को युद्ध में पराजित कर टीपू के साथ 1784 मंगलौर की संधि करते हुए युद्ध को समाप्त किया ।

तृतीय आंग्ल–मैसूर युद्ध (1790–92) :-

1. इस समय बंगाल का गवर्नर जनरल कार्नवालिस था। टीपू सुल्तान फ्रांसीसियों से संबंध बनाऐ हुए था । फलतः अंग्रेजों के साथ तनाव पैदा हुआ, तो दूसरी तरफ कार्नवालिस ने मित्र राज्यों की सूची मे मैसूर को शामिल नहीं किया । अतः दोनों के बीच तनाव बढा । इसी तरह त्रावणकोर राज्य पर टीपू ने हमला किया, जो ब्रिटिश का संरक्षित राज्य था । अतः मैसूर और अंग्रजों के बीच युद्ध शुरू हो गया ।
2. इस युद्ध में अंग्रेज–निजाम और मराठों का त्रिगुट मैसूर के विरूद्ध बना। युद्ध में टीपू पराजित हुआ और 1792 मे श्रीरंगपट्टम की संधि करनी पडी । इस संधि के तहत टीपू का आधा राज्य अंग्रेजों को प्राप्त हुआ। युद्ध क्षतिपूर्ति के रूप मे एक बडी धनराशि टीपू पर आरोपित की गई। इस और टीपू के दो पुत्र अंग्रेजों के पास बंधक रखे गए । इस तरह मैसूर की शक्ति को कमजोर कर दिया गया। इसी संदर्भ में कार्नवालिस ने कहा कि हमने अपने मित्रों को शक्तिशाली बनाऐ बगैर अपने शत्रु को पंगु बना दिया। वस्तुतः यदि कार्नवालिस द्वारा मैसूर राज्य का पूर्ण विलय कर लिया जाता, तो उसके अधिक क्षेत्रों को अपने युद्धकालीन मित्रों निजाम और मराठों को दोनों को देना पडता जिससे वे शक्ति संपन्न हो सकते थे और ब्रिटिश के लिए चुनौती प्रस्तुत करते । अतः इस चुनौती से बचने के लिए कार्नवालिस ने टीपू के साथ संधि की और उसका आधा राज्य प्राप्त किया और उसे कमजोर बना दिया । इस दृष्टि से श्रीरंगपट्टम की संधि एक दूरदर्शिता पूर्ण कदम थी ।

चतुर्थ आंग्ल-मैसूर युद्ध (1799) :-

इस समय बंगाल का गवर्नर जनरल लार्ड वेलेजली था । इस समय टीपू फ्रांसीसियों से संबंध बनाऐ हुए था, तो दूसरी तरफ यूरोप में नेपोलियन से मिस्र का अभियान कर रहा था । अतः अंग्रेजों को अपने भारतीय उपनिवेश की सुरक्षा की चिंता हुई। ऐसे में वेलेजली ने फ्रांस से संबंध रखने वाली भारतीय शक्ति को समाप्त करना चाहा । इसी क्रम में वेलेजली ने मैसूर पर हमला कर टीपू को समाप्त किया और मैसूर के बडे क्षेत्र पर नियंत्रण स्थापित किया। मैसूर के छोटे से क्षेत्र पर पुराने ओडयार वंश के दो वर्षीय शासक को सत्ता सौंपी और उससे सहायक संधि कर ली । इस विजय के पश्चात वेलेजली ने कहा कि पूर्व का साम्राज्य हमारे कदमों में है ।

टीपू सुल्तान :-

1. टीपू ने फ्रांसीसी क्रांति के दौरान जन्में क्रांतिकारी समूह जैकोबियन क्लब की सदस्यता ली और अपनी राजधानी श्रीरंगपट्टम में स्वतंत्रता का वृक्ष लगाया। टीपू ने अपने सैन्य संगठन को यूरोपीय पद्धति से युक्त किया।
2. टीपू भारत का प्रथम शासक था जो आर्थिक शक्ति को सैनिक शक्ति का आधार मानता था । अतः टीपू ने यूरोपियों के समान ही व्यापारिक कंपनी के निर्माण की बात कही । उसने विभिन्न देशो मे अपने दूत भेजे और उनसे व्यापारिक संबंध बनाने का प्रयास किया ।
3. टीपू ने कहा कि भेड की तरह लम्बी जिन्दगी जीने के बजाऐ, शेर की तरह एक दिन जीना बेहतर है।

शिवाजी (1627-80)
↓ पुत्र
शाहूजी (1680-89) → पुत्र → साहूजी (कैदखाने में)
राजाराम (1689-1700) → पत्नी → (ताराबाई)

साहूजी: 1707-49 तक छत्रपति

मराठा राज्य
→ स्वराज क्षेत्र (प्रत्यक्ष नियंत्रण) → छत्रपति को सरदेशमुखी कर प्राप्त होता था।
→ मुल्क-ए-कदीम पडोसी क्षेत्र

देशमुख-पद/भू-स्वामी का

देशमुखों का प्रधान-सरदेशमुख (छत्रपति)

मुल्क-ए कदीम
↓
यहाँ मराठा सेना अभियान करते थे।
↓
मराठा आक्रमण से बचने के लिए पडोसी राज्य चौथ देते थे

चौथ का बँटवारा विभिन्न मराठा सरदारों में होता था
(छत्रपति के पास सीमित अंश पहुँचता था)

'मराठा पेशवा'

1. बालाजी विश्वनाथ (1713–20) :-

I. मराठा पेशवा बालाजी विश्वनाथ ने मराठा शक्ति को संगठित किया तथा मुगलों के साथ एक समझौता किया । बालाजी विश्वनाथ ने चौथ वसूल करने का अधिकार विभिन्न मराठा सरदारों को दे दिया फलतः मराठा संघ की नींव पडी ।

II. बालाजी विश्वनाथ ने 1719 ई. में मुगलों से समझौता कर विशेष अधिकार प्राप्त किया इस समझौते को इतिहासकार रिचर्ड टेम्पल ने मराठों का मैग्नाकार्टा (अधिकार पत्र) कहा ।

इस समझौते के तहत :-

I. मराठों के स्वराज क्षेत्र पर मुगलों ने उनके राजस्व अधिकारीं की मान्यता दी ।

II. दक्कन के राज्यों से चौथ एवं सरदेशमुखीकर वसूल करने का अधिकार मराठों को मिला ।

III. आवश्यकता पडने पर मराठे मुगलों की सहायता करेंगे और साथ ही रू. 10 लाख प्रतिवर्ष मुगलों को देंगे ।

इस समझौते के तहत जब मुगल अधिकारी सैय्यद बंधुओं ने मराठों से सहायता मांगी, तो बालाजी विश्वनाथ एवं खाण्डेरॉव दभादे के नेतृत्व में मराठा सेना दिल्ली पहुँची। इनकी सहायता से सैय्यद बंधुओ ने मुगल बादशाह फर्रूखसियर को मारकर नये बादशाह रफीउदरजात को गद्दी पर बैठाया । इसी बादशाह ने मराठा मैग्नाकार्टा संधि पर हस्ताक्षर किया ।

2. बाजीराव प्रथम (1720–40) :-

I. बाजीराव प्रथम ने मुगलों के प्रति अपनी नीति स्पष्ट करते हुए कहा कि हमें इस जर्जर वृक्ष के तने पर प्रहार करना चाहिए, शाखाएँ तो अपने आप गिर जाएंगी ।

II. बाजीराव प्रथम ने एक विशाल मराठा साम्राज्य के निर्माण का लक्ष्य घोषित किया और इसी क्रम में उसने कहा कि मराठा झण्डा कृष्णा नदी से कटक तक फहराया जाएगा ।

III. बाजीराव प्रथम ने हिन्दु पदशाही के नारे प्रचारित किया। वह शिवाजी के पश्चात् गुरिल्ला युद्ध पद्धति का सबसे बडा जानकार था ।

IV. बाजीराव प्रथम ने बुँदेलखण्ड के शासक छत्रसाल की मदद की । फलतः छत्रसाल ने बुंदेलखण्ड के कुछ क्षेत्र जैसे सागर, झांसी प्रदान किए और साथ ही मस्तानी नामक नर्तकी भी प्रदान की ।

3. बालाजी बाजीराव (नाना साहब, 1740–61) :-

I. इस पेशवा के समय शाहू की मृत्यु हो गई और फिर राजाराम द्वितीय छत्रपति बना। इसके साथ बालाजी बाजीराव ने संगोला की संधि कर पेशवा के पास संपूर्ण अधिकार निहित किया । अतः अब मराठा राज्य का पूर्णतः प्रधान पेशवा बन गया और पूना पेशवा की शक्ति का केन्द्र बना ।

II. बालाजी बाजीराव के समय पानीपत का तीसरा युद्ध हुआ । यह युद्ध अफगान और मराठों के बीच हुआ इसमें अफगानों का नेतृत्व अहमदशाह अब्दाली ने किया तथा मराठों का वास्तविक सेनापति सदाशिवराव भाऊ था जबकि नाम मात्र का सेनापति पेशवा का पुत्र विश्वास राव था। इस युद्ध में मराठों को क्षेत्रीय शक्तियों का सहयोग नही मिला और जाट नेता सूरजमल युद्ध से अलग रहा ।

III. युद्ध में मराठा तोपखानें का नेतृत्व इब्राहिम गार्दी ने किया । युद्ध में मराठों की पराजय हुई और दोनों सेनापति मारे गए, पेशवा को सूचना मिली कि दो मोती विलीन हो गए । अतः सदमे में पेशवा भी मर गया ।

IV. इस युद्ध का आँखों देखा वर्णन पण्डित काशीराज ने किया। पानीपत के तीसरे युद्ध ने यह निर्धारित नहीं किया कि भारत का शासक कौन होगा बल्कि यह निर्धारित किया कि भारत का शासक कौन नहीं होगा । वस्तुतः मराठे मुगलों की सत्ता को चुनौती देकर भारत की सत्ता की दावेदारी कर रहे थे किन्तु पानीपत में हुई पराजय से उनकी दावेदारी को चोट पहुँची । इस दृष्टि से अब मराठे भारत के शासक नहीं बन सकते थे, तो दूसरी तरफ विजयी अफगान अहमदशाह अब्दाली भारत में सत्ता स्थापना में कोई रूचि नहीं रखता था । इस तरह अब भारत में अब अंग्रेजों की शासन सत्ता का मार्ग प्रशस्त हुआ ।

मराठों की असफला के कारण :-

I. मराठों में आपसी एकता का अभाव था ।
II. चौथ कर वसूली से मराठों ने अनेक शत्रु बनाए । फलतः क्षेत्रीय स्तर पर सहयोग प्राप्त नहीं हो सका ।
III. मराठों के सैन्य संगठन में कमजोरी थी । वस्तुतः अनुशासन, प्रशिक्षण एवं समन्वय का अभाव था ।

4. पेशवा माधवराज प्रथम (1761–72) :-

I. यह एक योग्य पेशवा था और पानीपत की पराजय का दुष्प्रभाव मराठा शक्ति पर इसने पडने नहीं दिया । इसके समय में मराठा नेता महादजी सिंधिया के प्रयास से मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय को दिल्ली की गद्दी पर बैठाया गया ।
II. माधवराज की बीमारी की वजह से हुई । असमय मृत्यु को मराठों के लिए पानीपत की पराजय से अधिक घातक माना जाता है ।

5. पेशवा नारायण राव (1772–73) :-

इसकी हत्या रघुनाथ राव ने कर दी किन्तु फिर भी वह पेशवा बनने में सफल नहीं हुआ ।

6. पेशवा माधवराज द्वितीय (1774–95) (माधवराज नारायण राव):-

I. यह अल्पायु था । अतः माधवराज द्वितीय के लिए मराठा सरदारों ने बारा भाई परिषद (12 सदस्यों की एक परिषद) का गठन किया जिसके प्रमुख नाना फडनवीस थ ।
II. माधवराज द्वितीय के पेशवा बनने पर रघुनाथ राव असंतुष्ट होकर अंग्रेजों के पास चला गया और उसने सूरत की संधि की । इसी के साथ अंग्रेज मराठों के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप करने लगे फलतः अंग्रेजों के साथ मराठों का युद्ध शुरू हुआ ।

प्रथम आंग्ल मराठा युद्ध (1775–82) :- सालबाई की संधि से यह युद्ध समाप्त हुआ और अंग्रेजों ने माधवराज द्वितीय को ही पेशवा स्वीकार किया ।

7. पेशवा बाजीराव द्वितीय (1795–1818) :-

यह अन्तिम पेशवा था । इसे मराठा सरदार होल्कर ने चुनौती दी थी । अतः यह भागकर अंग्रेजों की शरण में चला गया और अंग्रेजों के साथ बेसिन की संधि की। इस समय ब्रिटिश गवर्नर लॉर्ड वेलेजली थे । जो सहायक संधि प्रणाली लागू कर रहा था, अतः बेसिन की संधि भी मराठों के साथ की गई जिसके प्रावधान निम्नलिखित थे–

I. पेशवा ने ब्रिटिश संरक्षण स्वीकार किया और पूना में ब्रिटिश सेना रखने की बात स्वीकार की। पेशवा इस सेना के खर्चे के लिए रू. 26 लाख अंग्रेजों को देगा ।

II. पेशवा ने अपनी विदेश नीति अंग्रेजों को सौंप दी अर्थात युद्ध और शांति के संदर्भ में निर्णय अंग्रेज करेगें । यह संधि मराठों के लिए अपमानजनक थी । अतः उन्होंने अंग्रेजों का विरोध किया इसी क्रम में अंग्रेजों के साथ पुनः युद्ध शुरू हुआ ।

द्वितीय आंग्ल मराठा युद्ध (1803–1805) :-

इस युद्ध के दौरान ब्रिटिश गवर्नर जनरल वेलेजली ने मराठा सरदारों को युद्ध में पराजित किया और उनसे अलग संधि कर आर्थिक प्रादेशिक लाभ प्राप्त किया ।

भोंसले के साथ	–	देवगांव की संधि
सिंधिया के साथ	–	सुर्जीअर्जुन गाँव की संधि
होल्कर के साथ	–	राजपुर घाट की संधि

तृतीय आंग्ल-मराठा युद्ध (1818) :-

I. इस समय ब्रिटिश गवर्नर जनरल लॉर्ड हेस्टिंग्स था। अंग्रेजों ने पिण्डारियों के विरूद्ध अभियान किया जिससे मराठों को भी चुनौती मिली। इसी क्रम में युद्ध शुरू हुआ ।
II. पिंडारी एक लडाकू लूटपाट करने वाला समूह था जो मराठों के सहयोगी के रूप में कार्य करता था। ये लूटपाट कर अंग्रेजों के लिए कानून व्यवस्था की समस्या पैदा कर रहे थे । अतः अंग्रेजों ने इनके विरूद्ध कार्यवाही शुरू की जो तीसरे मराठा युद्ध के रूप में परिवर्तित हो गइ ।
III. पेशवा को पराजित करके उसके साथ पूना की संधि की गई जिसके तहत पेशवा का पद समाप्त कर दिया गया। बाजीराव द्वितीय को पेंशन देकर कानपुर के निकट बिठुर भेज दिया गया । इसी के साथ मराठा क्षेत्र पर ब्रिटिश नियंत्रण स्थापित हुआ । इस तरह कपास उत्पादक क्षेत्र पर नियंत्रण कर ब्रिटिश ने ब्रिटेन के औद्योगिकरण की आवश्यकता की पूर्ति की ।

मराठों की असफलता के कारण :-

I. कुशल नेतृत्व का अभाव
II. मराठा संघ के अस्तित्व में आने से मराठों की एकता भंग हुइ ।
III. चौथ वसूली की नीति ने अनेक शत्रु पैदा किए । अतः क्षेत्रीय सहयोग नहीं मिल पाया ।
IV. वैज्ञानिक तकनीकी पिछडापन, कमजोर गुप्तचर प्रणाली एवं राष्ट्रीय भावना का अभाव भी उनके पतन का कारण बना ।

मराठा प्रशासन

1. मराठा राज्य की आय का सर्वप्रमुख स्त्रोत चौथ एवं सरदेशमुखी था । चौथ आक्रमण के बदले पडोसी क्षेत्रों से प्राप्त किया जाता था । चौथ का विभाजन विभिन्न मराठा सरदारों में होता था ।
   मोकास :- 66 प्रतिशत संबंधित मराठा सरदार को (चौथ का सर्वाधिक अंश)
   बाबर्ती :- चौथ का 25 प्रतिशत छत्रपति को
   सहोतरा :- चौथ का 6 प्रतिशत पंच सचिव को
   नादगौडा :- चौथ का 3 प्रतिशत छत्रपति के विवेक पर छोड दिया जाता था
2. मराठों के यहां गाँव का मुख्य अधिकारी पाटील या पटेल कहलाता था जो कर संबधी न्यायिक कार्य से जुडा होता था। पटेल के नीचे कुलकर्णी होता था जो ग्राम भूमि का लेखा-जोखा रखता था । इसके नीचे चौगुले होते थे, जो कुलकर्णी के लेखों की देखभाल करते थे ।
3. इसके अतिरिक्त गांव में 12 अलूटे-बलूटे (व्यावसायिक समूह) होते थे ।

पंजाब (1849)

रणजीत सिंह (1780-1839)

1. पंजाब में 12 मिसल मौजूद थी । इसमें सुकरचकिया मिसल सर्वाधिक शक्तिशाली थी। रणजीत सिंह इसी मिसल से संबधित थे । इन्हें अफगान शासक जमानशाह ने राजा की उपाधि दी थी। 1799 ई. में रणजीत सिंह ने लाहौर को अपनी राजधानी बनाई ।
2. 1809 ई. में अंग्रेज गवर्नर जनरल लार्ड मिंटो के प्रतिनिधि मेटकॉफ ने रणजीत सिंह के साथ अमृतसर की संधि की। इसके तहत रणजीत सिंह और अंग्रेजों के बीच मैत्रीपूर्ण संबंध बने और दोनों ने एक-दूसरे के राज्य की सीमाओं के सम्मान करने की बात कही ।
3. रणजीत सिंह ने अफगान शासक शाहशुजा को वहाँ शासक बनने में सहायता दी । अतः बदले में शाहशुजा ने रणजीत सिंह को कोहिनूर हीरा प्रदान किया ।
4. फ्रांसीसी यात्री विक्टर जेकमा ने रणजीत सिंह की तुलना नेपोलियन से की ।
5. रणजीत सिंह निरंकुश शासन में विश्वास रखते थे । उन्होने अपने प्रशासन में विभिन्न धर्म और जाति के लोगों को शामिल किया । उसके तोपखाने का प्रधान इलाही बख्श था ।
6. रणजीत सिंह ने सर्वाधिक ध्यान सेना के गठन में दिया और यूरोपीय पद्धति से सेना का गठन किया इनकी सेना को एशिया की दूसरी सबसे बडी सेना कहा गया ।
7. रणजीत सिंह ने घुडसवार सेना के प्रशिक्षण के लिए फ्रांसीसी सेना अधिकारी एलार्ड को तथा पैदल सेना के लिए इटली के सेनापति बबेरा को और तोपखाने के प्रशिक्षण के लिए फ्रांसीसी जनरल कोर्ट एवं गार्डनर को नियुक्त किया। रणजीत सिंह ने अपनी सेना को महीना वेतन पद्धति से युक्त किया ।
8. रणजीत सिंह के समय आय का सर्वप्रमुख स्त्रोत भू-राजस्व था, जो 33 से 40 प्रतिशत की दर से लिया जाता था ।
9. रणजीत सिंह का राज्य 4 प्रांतो में विभक्त था जो लाहौर, मुल्तान, कश्मीर और पेशावर थे ।
10. 1839 में रणजीत सिंह के मुत्यु के पश्चात् दरबारी गुटबंदी को बढावा मिला और फिर क्रमशः थोडे ही समय में कई शासक गद्दी पर बैठे। खड्ग सिंह, नौनिहाल सिंह, शेर सिंह, दिलीप सिंह थे । दिलीप सिंह 1843 में शासक बने वे अल्पवयस्क थे । अतः माता जिंदन उनकी संरक्षिका बनी । इन्हीं के समय अंग्रेज और सिक्खों के बीच दो युद्ध हुए ।

प्रथम आंग्ल सिक्ख युद्ध (1845-46) :-

इस समय ब्रिटिश गवर्नर जनरल लार्ड हार्डिंग था । उसके दूत मेजर ब्राडफूट ने सिक्खों के विरूद्ध उत्तेजक बयान दिया । फलतः सिक्ख सेना असंतुष्ट हुई । इसी क्रम में युद्ध शुरू हुआ। युद्ध में सिक्ख अधिकारी लाल सिंह एवं तेजा सिंह के अंग्रेजों के मैत्रीपूर्ण संबंधों के कारण सिक्खों की पराजय हुई । अंततः अंग्रेजों ने दिलीप सिंह के साथ लाहौर की संधि की और युद्ध क्षतिपूर्ति की रकम आरोपित की । इसी क्रम में अंग्रेजों ने दिलीप सिंह से कश्मीर का सूबा प्राप्त किया और उसे गुलाब सिंह को बेच दिया ।

आगे चलकर अंग्रेजों ने दिलीप सिंह से पुनः भैरोवाल की संधि की, जिसके तहत् रानी जिंदन कौर की संरक्षिता समाप्त कर दी । और उन्हें 1-5 लाख रू. की पेंशन दी गई । अब लाहौर दरबार में एक स्थायी ब्रिटिश सेना रखी गई जिसका खर्च 22 लाख रू. वार्षिक दिलीप सिंह द्वारा दिया जाना था ।

द्वितीय आंग्ल सिक्ख युद्ध (1848–49) :-

इस समय ब्रिटिश गवर्नर जनरल लार्ड डलहौजी था जो विलय और विस्तार की नीति में विश्वास रखता था । इसी क्रम में उन्होनें सिक्खों पर युद्ध शुरू करने का आरोप लगाया और कहा कि मै विश्वास दिलाता हूँ कि उनसे यह युद्ध प्रतिशोध सहित लडा जाएगा । अंततः युद्ध में सिक्खों को पराजित कर 1849 में पंजाब राज्य का विलय कर लिया गया ।

'अवध'

स्वतंत्र अवध राज्य की स्थापना सआदत खाँ ने 1722 ई. में की और फैजाबाद को अपनी राजधानी बनाया जिसने नादिरशाह को दिल्ली पर हमले के लिए आमंत्रित किया किन्तु भेद खुलने के डर से आत्महत्या कर ली ।

सफदरजंग :- मुगल सम्राट अहमदशाह ने इसे अपना वजीर बनाया । अतः यह नवाब वजीर के नाम से जाना जाता है ।

शुजाउद्दौला :-इसने मुगल बादशाह शाह आलम द्वितीय को शरण दी और पानीपत के तीसरे युद्ध में अहमदशााह अब्दाली का सहयोग किया तथा बक्सर के युद्ध में अंग्रेजों के विरूद्ध मीर कासिम का साथ दिया और पराजित हुआ । इसी क्रम में अंग्रेजों ने शुजाउद्दौला के साथ 1765 में इलाहबाद की संधि की ।

आसफउद्दौला :-इसने अपनी राजधानी लखनऊ बनाई और वहाँ एक विशाल धार्मिक भवन इमामबाडा का निर्माण किया ।

वजिद अली शाह :- यह अवध का अंतिम नवाब था। डलहौजी ने कुशासन के आरोप में अवध को अंग्रेजी राज्य में मिलाया वस्तुतः अवध में मौजूद ब्रिटिश प्रतिनिधि आउट्म के नेतृत्व में एक सरकारी रिपोर्ट प्रस्तुत की, जिसमें अवध के शासन की आलोचना की गई। इसी आधार पर अवध का विलय हुआ ।

अवध के संदर्भ में एक गैर सरकारी रिपोर्ट बिशप हीवर और कैप्टन लोकिट ने तैयार की, जिसमें अवध के शासन की प्रशंसा की गई थी और वस्तुतः इस समय ब्रिटिश राज्य की नीति विलय और विस्तार करने की थी । इसलिए ऐसे क्षेत्रों पर प्रत्यक्ष नियंत्रण स्थापित करने पर बल दिया गया, जिससें राजस्व की अधिकतम प्राप्ति हो सक । वस्तुतः यह काल ब्रिटिश औद्योगिक क्रांति के दौर में मुक्त व्यापार का कल था । इसलिए प्रत्यक्ष विलय की नीति अपनायी गई। कुशासन का आरोप, तो महज एक बहाना है ।